अध्याय-13

समुदाय आधारित आपदा प्रबंधन

(COMMUNITY BASED DISASTER MANAGEMENT)

बच्चों, तुमने जरूर सुना होगा या देखा भी होगा कि तपती गर्मी में जब गाँव के किसी घर में आग लग जाती है तो गाँव के लोग मिलजुलकर उसका सामना करते हैं। गाँव के लोग अनादि काल से आगजनी, डकैती और जंगली जानवरों के हमले का सामना करते रहे हैं। यही मेल-जोल समुदाय को जन्म देता है। समुदाय भावनात्मक लगाव से उत्पन्न एक समूह है, जहाँ लोग एक साथ सुख-दु:ख का सामना करते हैं। भारत की संस्कृति बहुत ही प्राचीन है, इसका सबसे बड़ा आधार सामुदायिकता है।

बच्चों, तुमने देखा होगा कि आजकल गाँवों में अक्सर ग्राम सभा की बैठक होती है। उसमें विचार का सबसे बड़ा विषय होता है कि किस प्रकार मिल जुलकर कुछ ऐसा काम करें जिससे गाँव की समस्याओं का समाधान हो और गाँव का विकास भी हो सके।

© BSTBPC

भारत : परम्परागत रूप से सामुदायिक आपदा प्रबंधन का समाज

परिवार में शिशु का जन्म, नये घर में प्रवेश, विवाह से लेकर मृत्यु, आगजनी, आँधी और ओला-पात, जैसी सुख-दुख की घटनाओं का सामना समाज के लोग मिलजुलकर करते रहे हैं। इसी मेल-जोल से स्वत: समुदाय आधारित आपदा प्रबंध का भी विकास हुआ है। सिंधु घाटी की सभ्यता और महाभारत काल से लेकर वर्त्तमान संयुक्त परिवार की प्रथा हमारी सामुदायिक व्यवस्था को ताकत देती है। यद्यपि शहरी क्षेत्रों में एकल परिवारों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन वहाँ भी बिजली, पानी, सड़क और सफाई के लिए जब मुहल्ले भर के लोग मिलजुलकर आवाज उठाते हैं तो यह सामुदायिक अभिव्यक्ति ही है। बच्चों, तुमने अपने मोहल्ले में होली, ईद एवं दशहरा के समय देखा होगा कि शांति हेतु कमिटी का गठन होता है। यह सामुदायिक प्रबंधन का ही अंग है।

चित्र 13.1 आपदा से निपटने की तैयारी में मशगूल राजस्थान के एक गाँव की ग्राम सभा

आपदा प्रबंधन में समुदाय की केन्द्रीय भूमिका

आपदा का रूप कोई भी क्यों न हो, उसका विनाशकारी प्रभाव जान-माल पर पड़ता ही है। आपदा का पहला झटका मनुष्य को लगता है और मनुष्य ही आपदा को पहला

बच्चों, क्या तुम जानते हो कि-

1. कोई भी आपदा सूचना देकर नहीं आती है। अधिकतर परिस्थितियों में इसका पूर्वानुमान किया जाता है।
2. आपदा आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से असमान परिवारों में कोई भेदभाव नहीं करती है।
3. आपदा प्रबंधन के लिए समुदाय का सहयोग अनिवार्य है।
4. आपदाओं से निपटने के लिए समुचित तैयारी की आवश्यकता है। तैयारी के अभाव में यह बड़े हादसों या दुर्घटना का रूप ले सकता है।

झटका भी देता है। जब वह आपदा को न्यून करने का सामुदायिक प्रयास प्रारम्भ करता है। आपदा से होनेवाली वास्तविक ह्रास का सही अनुमान समुदाय ही लगा सकता है। आपदा प्रबंधन के लिए जो भी आकस्मिक सुविधायें उपलब्ध करायी जाती हैं उसके वितरण में तथा प्रत्येक परिवार तक उसके लाभ को पहुँचाने में समुदाय की केंद्रीय भूमिका होती है। समुदाय ही आपदा के पूर्वानुमान की जानकारी देता है और समुदाय के लोग ही सबसे पहले आपदा का सामना करते हैं। आपदा में मकान जल सकते हैं, घरें गिर सकती हैं, बाढ़ आ

सकता है, किंतु समुदाय नहीं टूटता है। समुदाय सुख-दुख का साथी होता है और भारत जैसे ग्रामीण देश में आपदा प्रबंधन की सबसे बड़ी जिम्मेदारी समुदाय की होती है (चित्र 13.1)। प्रशासनिक प्रबंधन कार्य और स्वयंसेवी संस्थाओं का प्रबंधन कार्य भी सामुदायिक नेतृत्व के माध्यम से ही सफलतापूर्वक सम्भव होता है।

आपदा प्रबंधन के सामुदायिक घटक

आपदा प्रबंधन एक महत्वपूर्ण सामुदायिक कार्य है। आपदा प्रबंधन के तीन प्रमुख अंग होते हैं और तीनों ही अंगों की सफलता में समुदाय की सहभागिता होती है। ये तीन अंग है -

(1) पूर्वानुमान, चेतावनी एवं प्रशिक्षण

(2) आपदा के समय प्रबंधन गतिविधियाँ

(3) आपदा के बाद प्रबंधन कार्य।

इन तीनों ही कार्यों में परिवार, ग्राम सभा, आसपास कार्यरत स्वयंसेवी संस्था और निकटतम विद्यालय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

आपदा का पूर्वानुमान प्रशासन और समुदाय दोनों को लगता है। संभव है कि कभी-कभी मानवीय आपदा घटित ही नहीं हो लेकिन प्रबंधन की तैयारी आवश्यक है। जैसे - प्रत्येक गर्मी ऋतु में आगजनी लगभग निश्चित आपदा है। इसकी जानकारी सभी को होती है। इसी प्रकार तपती गर्मी की ऋतु और वर्षा ऋतु में साँप, बिच्छू के दंश से मरनेवालों की संख्या अधिक होना भी एक प्रकार का सामुदायिक आपदा है। इन आपदाओं के पूर्वानुमान और उसकी सूचना से बड़े स्तर पर जान-माल को बचाया जा सकता है। आग की संभावना को देखते हुए अग्निशामक को पूर्व ही सूचना दी जा सकती है। आग लगते ही समुदाय के लोग सबसे पहले उन लोगों को घर से निकलने में लग जाते हैं जो आग लगने के समय घर के अंदर फँसे हुए हैं। इसी प्रकार खेत-खलिहान में बीड़ी, सिगरेट के टुकड़े से कभी-कभी आग लग जाती है। इससे फसल जल जाते हैं।

अग्निशमन दस्ता के आने के पूर्व ही समुदाय इसके प्रभाव को कम करने का प्रयास करता है। यह काम दो भागों में होना चाहिए।

© BSTBPC TO BE PUBLISHED © BSTBPC

(1) झुलसे हुए लोगों को एक जगह ले जाकर प्राथमिक उपचार आवश्यक है। आगजनी की स्थिति में पंचायत भवन या विद्यालय भवन में ले जाना महत्वपूर्ण है। बच्चों, यहाँ तुम भी मदद कर सकते हो, जले हुए भाग पर पानी डालना और चन्दन के लेप लगाने से जले हुए लोगों को बड़ी राहत मिलती है। जले हुए भाग पर बर्फ के उपयोग से भी राहत मिलती है। टेलीफोन और मोबाईल का प्रयोग करते हुए निकटतम अस्पताल से एम्बुलेंस को मंगाना और घायल या अर्द्ध जले हुए लोगों को अच्छे उपचार के लिए अस्पताल पहुँचाना आवश्यक है(चित्र 13.2)। यदि गाँव में किसी को कार अथवा अन्य ऑटो-मोबाइल हो तो उसका भी उपयोग करना चाहिए। बच्चों, तुम अस्पताल नहीं जा सकते हो लेकिन तुम मिल-जुलकर उनके परिवार की मदद कर सकते हो। उस परिवार के हमजोली भाई-बहनों के साथ कुछ घंटे बिताने से भावनात्मक राहत का कार्य होता है।

चित्र 13.2 एक एम्बुलेंस : आपदा के क्षण का सहारा

समुदाय के दूसरे समूह के लिए आवश्यक है कि वे आग लगे हुए क्षेत्र पर तथा कुछ हटकर भी जल छिड़काव करें या खलिहान के फसल को हटाने का कार्य करें। फसल पर गोबर और मिट्टी डालने का कार्य करें इससे आग का फैलाव कम हो जाता है।

क्या तुम जानते हो कि –

आग लगने पर प्राथमिक उपचार के लिए शरीर पर ठंढा पानी डालने के अलावे चंदन का लेप या बरनॉल लगाने से जले भाग में राहत महसूस होती है।

क्रियाकलाप :

तुम अपने गाँव/मुहल्ला के परिवार की सूची तैयार करो जहाँ पिछले एक वर्ष में आग लगने से घर तथा फसल की बर्बादी तथा मवेशी और आदमी की मौत हुई है।

अपने गाँव/मुहल्लों के उन परिवारों की सूची बनाओ जहाँ सर्पदंश से किसी की मौत हुई हो।

तुम अपने विद्यालय में किस प्रकार आपदा प्रबंध की व्यवस्था कर सकते हो- अपने प्रधानाध्यापक, शिक्षकों का साक्षात्कार लेकर एक रिपोर्ट तैयार करें।

आपदा प्रबंधन के लिए समुदाय की क्रियाशीलता

बच्चों, गाँव स्वयं एक समुदाय होता है लेकिन यदि वह क्रियाशील नहीं है तो फिर वह आपदा के समय भी दर्शक की भाँति ही रह सकता है। यह कहावत ठीक ही है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता है। एक व्यक्ति सफलतापूर्वक आपदा का सामना नहीं कर सकता लेकिन जब वे एक से अनेक हो जाते हैं तो उसमें कई अच्छे गुणों का समावेश होने लगता है। ये अच्छे गुण ही उन्हें स्वत: आपदा प्रबंधन के लिए प्रेरित करता है।

क्या आप जानते हैं कि –

आपदा प्रबंधन के लिए समुदाय में निम्नलिखित अच्छे गुणों का होना जरूरी है –

1. समुदाय के सदस्य सदैव समुदाय के भलाई के विषय में सोचें।
2. समुदाय द्वारा जब सामूहिक कार्य के लिए टीम का गठन हो तो उसे कामचोर लोगों से बचाना चाहिए। उसमें परिश्रमी और साहसी लोग ही आपदा का सामना कर सकते हैं।

3. उसमें जात–पात और धर्म आधारित भेदभाव नहीं होनी चाहिए। जब आपदा अपने प्रकोप में विभेद नहीं करता है तो सबों में यह भावना विकसित होनी चाहिए कि एक जुट होने से ही आपदा का प्रभाव कम हो सकता है।
4. समुदाय के हर व्यक्ति को सजग रहना चाहिए कि वे संभावित आपदा की जानकारी शीघ्र ही एक दूसरे को दें। इस प्रकार की जानकारी देने से कई बार जाति और सांप्रदायिक दंगे रुके हैं। इससे अफवाह फैलाने वाले नौ–दो ग्यारह हो जाते हैं और मानव जनित आपदा पर सामुदायिक प्रबंधन भारी पड़ जाता है।
5. समुदाय के लोगों में उत्साह, साहस और आवश्यकतानुसार सख्ती के प्रयोग की क्षमता होनी चाहिए।
6. हर व्यक्ति के बहुत सारे निजी कार्य होते हैं लेकिन सामुदायिक आपदा के सामने निजी कार्य को गौण समझते हुए इसके सामना करने हेतु आगे आना चाहिए।

बच्चों, तुमने यह भी पढ़ा होगा कि भारत की स्वतंत्रता के समय हिंदू–मुस्लिम आपस में लड़ गये थे। यह सामुदायिक प्रबंधन ही था जिससे कि भाईचारे का पुनः विकास हुआ। महात्मा गाँधी ने नोआखली के हिंसा को यह कहकर रोक दिया कि हिंदू–मुस्लिम, सिक्ख–इसाई हम सब भाई–भाई।

© BSTBPC

क्या आप जानते हैं –

सामुदायिक प्रबंधन के अंतर्गत प्राथमिक क्रियाकलापें निम्नलिखित हैं –

1. सूचना मिलते ही सार्वजनिक केंद्रों के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को आपदा की सूचना देना तथा किसी भी अफवाह का सामुदायिक स्थलों से खंडन करना।
2. गाँव के अल्पसंख्यक धर्म और जाति के लोगों में सद्भावना और आत्मविश्वास बढ़ाना।
3. आपदा की जानकारी प्रशासन तंत्र को देना।

4. निकटतम प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र को सूचना देना।
5. पंचायत के माध्यम से राहत कार्य प्रारंभ करना।
6. राहत कार्य के लिए स्वयंसेवी संस्थाओं को आमंत्रित करना।
7. राहत कार्य में गड़बड़ी न हो इसके लिए समन्वय टीम का गठन करना।
8. प्रभावित लोगों को कम से कम स्वच्छ जल और स्वच्छ भोजन की उपलब्धता की गारंटी करना।
9. आपातकालीन राहत शिविर की व्यवस्था करना।

आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी को सुनिश्चित करना

आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी को तभी सुनिश्चित किया जा सकता है जब संभावित आपदा की सूचना अधिक से अधिक लोगों को मिले। इसके लिए निम्नलिखित विधियों से ग्राम पंचायत प्रशासनिक व्यवस्था, स्वयंसेवी संस्था तथा प्रगतिशील व्यक्ति स्वयं आगे बढ़कर लोगों की भागीदारी सुनिश्चित कर सकते हैं :-

1) निकटतम विद्यालय में विद्यार्थियों के बीच यह घोषित करना कि बाढ़ अथवा आँधी की संभावना है इसलिए घर में लोगों को सचेत कर देना।

2) मंदिर-मस्जिद या गिरिजाघर में जाकर प्राकृतिक अथवा मानवजनित संभावित आपदाओं की जानकारी देना। यह जानकारी उस समय उचित होगा जब प्रार्थना के लिए अधिक से अधिक लोग उपस्थित हों। यदि आवश्यक हो तो धर्मस्थल में लगे हुए सार्वजनिक उद्घोषणा के द्वारा भी जानकारी दी जा सकती है।

3) वैसे परिवारों की सूची बनाना जहाँ अत्यधिक उम्र के वृद्ध, शिशु, गर्भवती महिला, बीमार और विक्षिप्त लोग हों। ऐसे लोगों के विस्थापन हेतु विशेष दल का गठन करना।

4) पंचायत भवन और गाँव के विद्यालय में राहत शिविर के लिए आपातकालीन व्यवस्था करना जिसमें खान-पान के अतिरिक्त, नाव, तैरनेवाले जैकेट, चिकित्सक और अभियंताओं की व्यवस्था करना।

5) आगजनी, महामारी, जाति और सांप्रदायिक तनाव और ओलावृष्टि जैसे आपदा में परिवहन की व्यवस्था रखना, जो संबंधित अधिकारी तक मोबाइल अथवा फोन नहीं रहने पर सूचना पहुँचा सके।

©BSTBPC WEB COPY NOT TO BE REPUBLISHED

ग्रामीण स्तर पर आपदा प्रबंधन समिति का गठन

ग्रामीण स्तर पर आपदा प्रबंधन समिति का गठन का राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय लिया गया है। इससे आपदा के समय राहत तथा बचाव कार्य सुनियोजित ढंग से चलाया जा सकेगा। आपदा की चेतावनी भी ग्रामीण प्रबंधन समिति अधिक सक्षम रूप से हरेक परिवार को दे सकता है। इस समिति में नौ सदस्य होते हैं। ये निम्नांकित हैं :-

1) विद्यालय के प्रधानाचार्य
2) गाँव के मुखिया
3) गाँव के सरपंच
4) गाँव के दो समर्पित लोग
5) प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र का एक डॉक्टर
6) राष्ट्रीय सुरक्षा सेवा के सदस्य (NSS)
7) ग्राम सेवक
8) स्वयं सहायता समूह की दो महिलायें।

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति का कार्य :

1) पूर्वानुमान के आधार पर चेतावनी एवं सूचना देना – यह प्रबंधन समिति जिला मुख्यालय से प्राप्त सूचनाओं को तत्काल लोगों तक पहुँचायेगा।
2) राहत शिविर का चयन और प्रभावित लोगों को राहत पहुँचाने का कार्य– इसी के साथ जिला प्रशासन को सूचित करेगा अगर आगजनी है तो दमकल को सूचित करेगा।
3) राहत कार्य – मुख्य रूप से लोगों को भोजन एवं पेयजल उपलब्ध कराना।
4) प्राथमिक उपचार की व्यवस्था।
5) सभी को सुरक्षा देना – महिला, बच्चों को विशेष रूप से ध्यान देना।
6) स्वच्छता का ख्याल रखना– स्वच्छता रखने से विभिन्न प्रकार की बीमारी नहीं फैलती है।

अभ्यास प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. आपदा प्रबंधन के तीन प्रमुख अंगों में कौन एक निम्नलिखित में शामिल नहीं है ?

(क) पूर्वानुमान, चेतावनी एवं प्रशिक्षण

(ख) आपदा के समय प्रबंधन गतिविधियाँ

(ग) आपदा के बाद निश्चिंत रहना।

(घ) आपदा के बाद प्रबंधन कार्य करना।

2. प्रत्येक ग्रीष्म ऋतु में कौन सी आपदा लगभग निश्चित है ?

(क) आगजनी (ख) वायु दुर्घटना

(ग) रेल दुर्घटना (घ) सड़क दुर्घटना

3. सामुदायिक प्रबंधन के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन एक प्राथमिक क्रियाकलाप में शामिल नहीं है ?

(क) निकटतम प्राथमिक चिकित्सा केंद्र को सूचित करना।

(ख) प्रभावित लोगों को स्वच्छ जल और भोजन की उपलब्धता की गारंटी करना ।

(ग) आपदा की जानकारी प्रशासन तंत्र को नहीं देना।

(घ) आपातकालीन राहत शिविर की व्यवस्था करना।

4. ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति के प्रमुख कार्य है ?

(क) प्राथमिक उपचार की व्यवस्था नहीं करना।

(ख) सभी को सुरक्षा देना।

(ग) राहत शिविर का चयन एवं राहत पहुँचाने का कार्य करना।

(घ) स्वच्छता का ख्याल रखना।

WEB COPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. अग्निशमन दस्ता आने के पूर्व समुदाय द्वारा कौन से प्रयास किये जाने चाहिए ?
2. ग्रामीण स्तर पर आपदा प्रबंधन समिति के गठन में कौन–कौन से सदस्य शामिल होते हैं ?
3. आपदा–प्रबंधन के लिए समुदाय में किन अच्छे गुणों का होना आवश्यक है ?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आपदा प्रबंधन में समुदाय की केन्द्रीय भूमिका का वर्णन करें ।
2. ग्रामीण आपदा प्रबंधन समिति के कार्यों का विस्तृत वर्णन करें ।
3. आपदा प्रबंधन में समुदाय की भागीदारी को कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है ?

© BSTBPC
WEB COPY NOT TO BE PUBLISHED
© BSTBPC